 ISSN: 2582-6530

दीपा राई की चार कविताएं

(1)

बारिश का आगमन

उसका धीरे-धीरे बरसना
ठहरे हुए मन की न जाने कितनी
परतें उधेड़ कर रख देता है।
उसका आना
ठीक वैसे ही है
जैसे बारिश का आगमन।

मैं रात भर बारिश को सुनती रही
धीरे-धीरे बरसता रहा उसका गीत
लगता है बहुत अरसे बाद
कोई गा रहा है दूर देश में।

(2)

सर्दी के दिन

ये सर्दी के दिन
कितने प्यारे लगते हैं
लगता है खिड़की
एक कथावाचक है
और मैं मगन होकर
आँखों से सब सुन रही हूँ
कानों से देख रही हूँ

लिहाफ के अंदर सिमटकर
चाय की चुस्कियां
और ये अनुभूतियां
सच में कितनी प्यारी लगती हैं

जैसे स्मृतियों में धँस गए हों अब
ये सर्दी के दिन।

(3)

कूची

रंग से कूची का नाता कहें तो
हजारों वर्षों से है
रंग के बिना कोई तरंग नहीं है
कूची के जीवन में
जब रंगों की सांस में घुल जाती है कूची की
स्मृतियाँ
खिंच जाती है एक लकीर
और चूमती है गर्म होठो से
कोरा कैनवास।

यकीनन उस आकार के भीतर
कोई जिंदा हो जाता है
कुछ हलचल हो जाती है
उनके अंदर
तब... हठात उठ जाती है वह लकीर
और चलने लगती है
ख़्वाब और हकीकत के दरमियाँ।

समय के कैलेंडर में देखती है कूची
अपने रूह को
महसूसती है
शताब्दियों के चित्र-यात्रा को
इतिहास की निर्मम हत्याओं को
जिसे वह भूल जाना चाहती है।
कूची ने हिला के रखा है रंग के भूगोल को
जिस भूगोल की कोई सीमा नहीं
कोई नाकाबन्दी नहीं
कोई दीवार नहीं

उसी भूगोल की आंखो ने देखा है
भ्यान गग की कूची के
होठो से पिघल रही स्टोरी नाईट को
देखा है, पिकासो की गुयेर्निका के मुठ्ठी उठाते हुये
विद्रोह को....
देखा है, लैनसिङ बाङदेल की कूची से चू रहे
नेपाली घाव को
जब-जब छुवा है
कूची के कठोर होठो ने
रंग की कोमलता को
तब तब गाया है कैनवास ने कभी न गाया हुआ
आदमी का पीड़ा गीत...

(4)

बारिश के हरे रंग

कड़ाके की ठंड चिकोटी काटती बाहर
यादों की गर्ममाहट ओढ़े मन मन के भीतर
बेसब्री से करती है सवेरा होने का इंतजार
बारिश से धूल मिट्टी-बंजर
एक बार फिर हरा-भरा होने को आतुर हैं

बारिश धीरे-धीरे पाव रखती सूखे पत्ते पर
सरसराहट पैर के हर छुअन पर
लेकर आती दूर कहीं से एक खुशबू
हरे रंग मचल जाते हैं
चारो ओर छाने के लिए
धरती के सूखे होठो पर गिरती कुछ नमियां
उर्वर होने को मचलती
इस कंचन धरती की काया
यह बारिश नहीं,
धरती के हरे होने का संकेत है।

(लेखकीय परिचय: दीपा राई हिंदी-नेपाली की चर्चित कवयित्री एवं चित्रकार हैं। हिंदी साहित्य सेवा समिति, सिक्किम की सक्रिय सदस्य के रूप में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में संलग्न है।)